

Title: Regarding obscenity in advertisements in print and electronic media.

श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर) : सभापति महोदय, देश के कोने-कोने में इन दिनों अधिकतर विज्ञापन अर्द्धनग्न एवं कामोत्तेजक अवस्था में दिखा कर अपने-अपने उत्पादों के प्रति आकर्षित किया जाता है, चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। इससे हमारे समाज पर बुरा असर पड़ रहा है। किसी नाश को अर्द्धनग्न अवस्था में दिखाना नाश समाज के लिए अपमानजनक है। साथ ही, 'यत् नश्यत्तु पूज्यन्ते, स्मन्ते तत् देवता' जैसी वैदिक मान्यताओं को भी कलंकित करता है। पाश्चात्य संस्कृति के दुप्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति पर खतरा मंडरा रहा है।

विज्ञापन ऐसी छोनी चाहिए जिससे उत्पादों का प्रचार-प्रसार भी हो, साथ ही साथ समाज और परिवार पर इसका अछा असर पड़े। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूँ कि वह ऐसे अर्द्धनग्न विज्ञापनों पर रोक लगाए। साथ ही हमारे यहां विश्वव्यापी मेला लगा हुआ है, धार्मिक मेले आदि अन्य आयोजनों पर इस प्रकार के विज्ञापन लगाए हुए हैं, उन पर अविलंब रोक लगाई जाए। इसके लिए मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करता हूँ।